सत्य साहित्य

वर्ष 6 / अंक 4
जुलाई 2023
Year 6/ No. 4
July
2023

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

मैं गोविंद गुण गाणा, गोविन्द गुण...

(1) राजा रूठे नगरी राखे
हरि रूठया कहे जाना। गोविन्द....

(2) राणो भेज्या ज़हर पियाला,
इमिरत कीर पी जाणा। गोविन्द....

(3) डिबिया में भेज्या भुजंगम,
सालिगराम कर जाणा। गोविन्द...

(4) मीरा अब तो प्रेम दीवाणी
सांवलिया वर पाणा। गोविन्द...

गोपाला, गोपाला देवकी नन्दन गोपाला
नन्द लाला नन्द लाला जसोमाते नन्दन
नन्द लाला।

• सत्य सनातन गोविन्दा,
हरि नारायण गोविन्दा।

- "जो जाणे गोपाल अब तो जो जाणा",
जो जाणे सिया राम " " " " ,
जो " जय राम " " " " ,

(परम पूजनीय महाराज जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- बधाई
- Soul is Immortal
- राम भरोसा तेरा
- गीता अध्ययन और साधक का दैनिक जीवन
- आप बीती
- श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

व्यास पूर्णिमा की बधाई

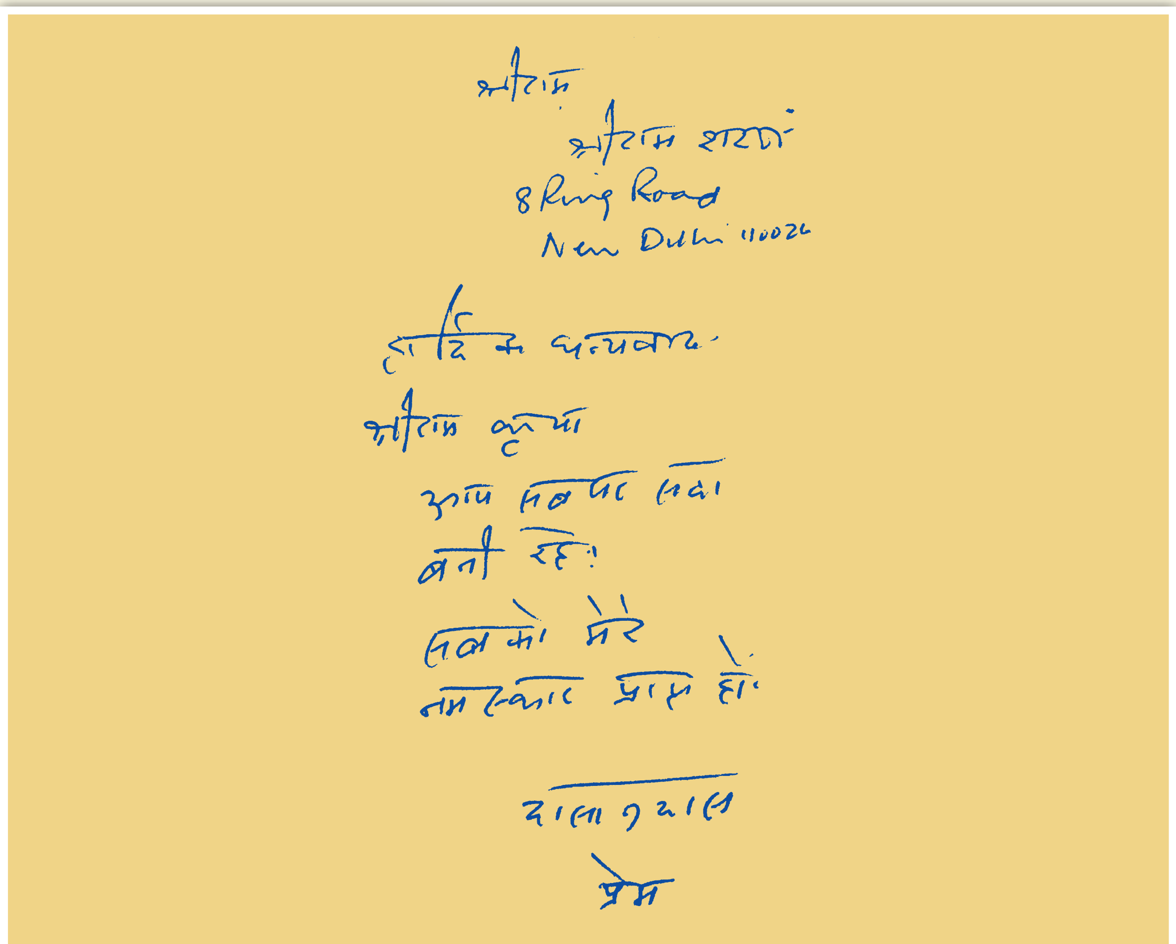

श्रीराम

श्रीराम शरणं
8 Ring Road
New Delhi 110026

हार्दिक धन्यवाद

श्रीराम कृपा
आप सब पर सदा
बनी रहे।
सब को मेरे
नमस्कार प्राप्त हों।

दादा दयाल

प्रेम

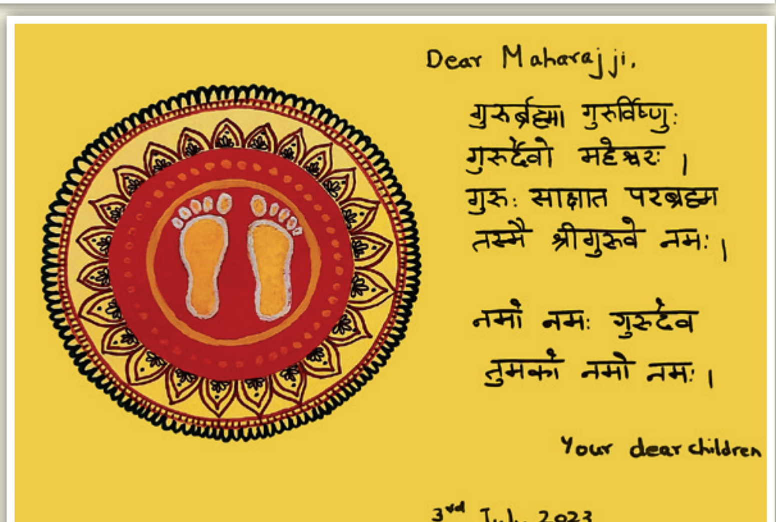

SOUL IS IMMORTAL

सत्यानन्द

When Shri Krishna Ji Maharaj spoke these words to Arjun, then with great humility he replied, "I will not kill. If I am killed in battle, I will be liberated. My bow is slipping from my hand and my mouth is drying up. My limbs are becoming limp. I am unable even to stand. My head is reeling, as it were." This despondent mood of Arjun's was removed once he became aware of the truth. Lord said, "You are the soul." Becoming aware of who one is, this is a big thing. In a jungle there are only four-five lions. So what if there are millions of jackals and rats? We tend more towards a despondent attitude. Lord has taunted Arjun's despondency, "What you are saying, it is an unworthy deed. It stems from the petty weakness of your heart. These are not deeds befitting your warrior caste. It leads to damnation. It will only spread your infamy." He reprimanded him severely. Called his compassion ignoble and unmanly. Shri Krishna Ji Maharaj described Arjun's unseemly compassion as faint-heartedness. Only a great philosopher can say, "You are the soul, you should do your duty."

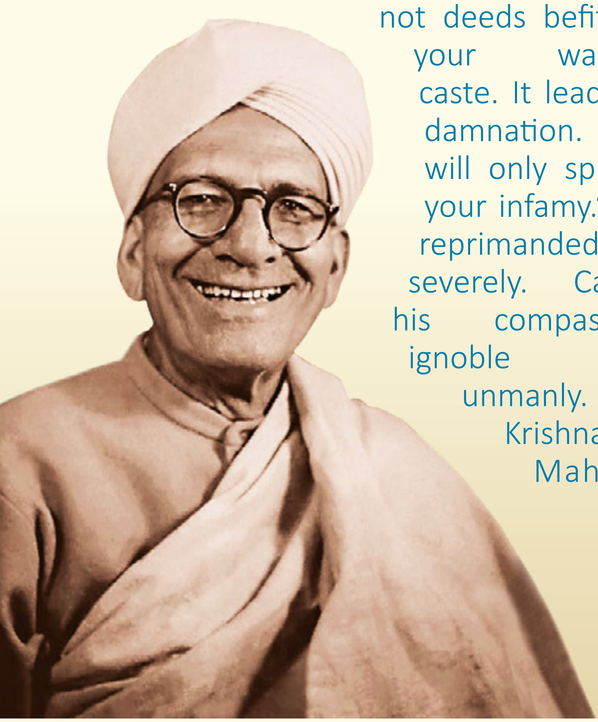

Lord said to Arjun, "Never was there a time when you did not exist. That is manifest in the three worlds and three times (past, present and future) and is vaster than all the various worlds of the universe. That is my soul. Soul is Existence, Knowledge, Pure, Bliss, Energy." Awareness of the self awakens the spiritual consciousness, how to realise the soul- "Sun-Sun Andhe Pawein Raha 'सुन सुन अंधे पावें राह।' (the blind reach their destination by following the sounds of other people)". So also the trusting man blindly goes where others are going. "That I am" - realise the soul in this way. One should contemplate this within. One day the soul will itself speak up- "That I am". This Indian methodology is a very high one. This tenet is a very old one. It is not a figment of imagination. This is religion. Religion is ever unchanging. There is a difference between doctrine and religion. Doctrines are adulterated with many wrong notions. Religion is like the pure waters of Ganga Ji which has not been tampered with by religious teachers and impostors. Which has not been randomly made up from here and there. Rest all the statues are the creations of religious teachers. At the core of religion is the soul. This has been explained in the scriptures.

(Pujniya Swami ji Maharaj, Pravachan Piyush, pages from 208-209) ■

राम भरोसा तेरा

प्रेम

परमेश्वर के नाम में पूरा भरोसा होना चाहिए। नाम जाप से कृपा अवतरित होती है, यह परमात्मा की देन है। यह पथ प्रदर्शक बन कर अपने पथ पर ले चलेगा। जो जितना भी जाप करेगा उतना ही थोड़ा है। नामी नाम में है। नाम में राम होते हैं। उसी की कृपा अवतरित होती है, अपने मार्ग पर ले जाती है। महाराज (स्वामी जी) के वाक्य हैं, कि राम सबके हृदय में रहता है उसका आसन मानव हृदय में है। अर्जुन को कहा,''उसी की शरण में रहो, वही परम धाम में पहुँचाएगा। नाम का ही भरोसा है नाम का सहारा हो। जो किसी समय भी किसी के साथ हो सकता है कहीं भी हो, यह हमेशा ही साथ देने वाली वस्तु है। अपने में ही कभी कमी हो जाए तो और बात है, वरन वह तो माँ बाप की तरह बच्चों से प्यार करते हैं। कभी राम परीक्षा नहीं लेते, साधक का कर्तव्य है कि हर समय उसी को अपना माँ–बाप समझे वही सच्चे माँ–बाप हैं, वही प्यारा है।

अगर संशय हो जाय तो अपना ही दुर्भाग्य है, सबसे उत्तम मंत्र व सर्वश्रेष्ठ यह राम नाम का महामंत्र है। इसके आराधन से सभी को लाभ हो सकता है। यह हमारा सौभाग्य है कि यह नाम हमें आसानी से प्राप्त हो गया है। भागीरथ गंगा को यहाँ लाए, महाराज ही जानते हैं कि नाम को कैसे लाए, कभी संशय नहीं आने देना। यही विश्वास होना चाहिए कि मैं राम शरण में हूँ, उसी के दरबार में हूँ, जब आराधन करता हूँ, जब ध्यान करता हूँ तो माँ राम अपनी गोद में उठा लेती है। यदि कहीं और भटकना शुरु कर दें तो दुर्भाग्य है। कोई जरुरी नहीं कि कृपा के लिए बाहर जाना, कृपा अवश्य होगी यह विश्वास होना चाहिए। उसी की शक्ति मुझे जगा रही है, और उसी का हाथ मेरे सिर पर है।

श्री राम तेरी कृपा सब पर हो।

(पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी का प्रवचन, 30 जून 1966 परम पूजनीय श्री महाराज जी के डॉयरी से)

गीता अध्ययन और साधक का दैनिक जीवन

विश्वामित्र

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

गीता जी का एक और पाठ आरम्भ हो रहा है। आप सबको बहुत बहुत बधाई देता हूँ, शुभ एवं मंगलकामनाएँ।

हम न जाने कितने ही गीता जी के पाठ कर चुके हैं और सुन चुके हैं। न जाने कितनी ही बार रामायण जी का पाठ, श्री अमृतवाणी का पाठ एवं श्री भक्ति प्रकाश का पाठ कर चुके हैं और न जाने कितनी ही बार सुन चुके हैं। पार्थ ने तो एक ही बार श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ सुना है। हम तो कई बार सुन चुके हैं और कई बार इनके पाठ कर चुके हैं परन्तु जैसा परिवर्तन अर्जुन के जीवन में आया, इतने पाठ करने के बावजूद क्या हमारे जीवन में भी परिवर्तन आया? क्या इसे देखना हमारा कर्तव्य नहीं है या फिर हमें मात्र पढ़ना और पाठ ही करना है। अर्जुन ने किन परिस्थितियों में श्री गीता जी का पाठ सुना है? युद्ध क्षेत्र में खड़ा हुआ अर्जुन कितना tense है। आपकी किसी से साधारण सी परिस्थिति में तू–तू मैं–मैं हो जाती है तो ब्लड प्रेशर कितना हाई हो जाता है। सोचें, अर्जुन जिस परिस्थिति में खड़ा है उसकी अपनी निजी स्थिति कैसी होगी? ऐसी स्थिति में उसने भगवान द्वारा दिया हुआ ज्ञान श्रवण किया है। श्री स्वामी जी महाराज ने आज श्रीमद्भगवद्गीता के महातम्य के अन्तर्गत अन्तिम पंक्तियों में कहा है कि गीता जी का महातम्य तभी मालूम होगा जब गीता ज्ञान को अपने जीवन में बसाया जाएगा। इन्हें अपने कर्मों में उतारा जाएगा तो आपको वही लाभ होंगे जो अर्जुन को हुए थे। अन्यथा तो पन्ने पलटने की बात है। अमृतवाणी के लिये भी, भक्तिप्रकाश के लिए भी। हम न जाने सुंदरकाण्ड के कितने पाठ कर चुके हैं लेकिन हमारा purpose अपने आप को बदलना नहीं है, न अमृतवाणी का पाठ कर के, न भक्ति प्रकाश का पाठ कर के, न रामायण जी का पाठ कर के और न ही

गीता जी का पाठ कर के। हमारा purpose तो बहुत अलग हुआ करता है जिसका सभी को पता भी नहीं है। हमारा purpose है क्या, क्यों कर रहे हैं हम पाठ? अर्जुन को क्या हुआ है? अर्जुन मोहजन्य मोह से पैदा हुई करुणा के कारण विषाद में चला गया है। यहीं से पहले अध्याय का आरम्भ होता है। पहला अध्याय आज पूरा हुआ होता तो आपको पता लगता कि अर्जुन किस दुर्दशा को प्राप्त हो गया है। सब कुछ छोड़–छाड़ कर, अपना गाण्डीव धनुष वाण इत्यादि छोड़ कर, उन्हें फेंक कर रथ के पिछले भाग में बैठ जाता है, मुँह लटका के। वह भगवान के सामने घोषणा कर देता है कि मैं एक साधु का जीवन व्यतीत करूँगा, युद्ध नहीं करूँगा, मैं अपने पितामह, अपने गुरुजनों को मारूँगा नहीं। उदास हो गया है अर्जुन सब कुछ छोड़ दिया है उसने। इतने गहरे विषाद में वह चला गया है कि उसे सुध नहीं है कि उसका कर्तव्य क्या है, वह शोक में चला गया है। उसकी दुर्दशा को देख कर तो भगवान उसको शाबाशी तो नहीं देते बल्कि उसे डाँट देते हैं। दूसरे अध्याय का शुभारम्भ ही भगवान की डाँट से होता है।

जब से अर्जुन अपने आपको शिष्य स्वीकार करता है, भगवान श्री गुरू महाराज की पदवी ग्रहण करते हैं। जब अर्जुन विषाद सहित है, ऐसा नहीं कि गुरु महाराज कह रहे हैं कि पहले आप स्वस्थ हो कर मेरे पास आओ। नहीं, अर्जुन ऐसा करने में सक्षम नहीं है। उसे इतना गहरा धक्का, आघात लगा हुआ है, इतना शोक ग्रस्त है कि वह इससे पार नहीं पा सकता। अतएव उसकी जैसी स्थिति है उसे छिपा कर नहीं बल्कि वैसी ही स्थिति में अपने आपको परमात्मा को सौंप देता है। अर्जुन ने जो अच्छी बातें की हैं वे हम सबके सीखने योग्य हैं, जीवन में उतारने योग्य हैं तभी हमें अर्जुन जैसा लाभ प्राप्त हो सकेगा। अर्जुन ने अपने विषाद को परमात्मा के साथ जोड़ दिया है और भगवान ने उसे विषादयोग बना दिया है। never mind, आप विषाद भी मेरे साथ जोड़ो तो मैं उसे योग बना दूँगा। जोड़ो, मैं आपको विषाद रहित हो कर अपने पास आने के लिये नहीं कहता। मैं जानता हूँ कि गुरु की भूमिका एक डॉक्टर की भूमिका है और डॉक्टर के पास कोई तन्दरुस्त नहीं जाता, रोगी जाएगा। जो तन्दरुस्त है वह डॉक्टर के पास क्या करने जाएगा? वह हॉस्पीटल क्यूँ जाएगा? उसे क्या जरूरत है जाने की। मत ऐसा चाहिएगा कि हम पहले अच्छे हो जाएँ तो फिर परमात्मा की चरण–शरण में जाएँगे तो बहुत देर हो जाएगी। समुद्र की लहरें उठनी बंद हो जायेंगी तब हम स्नान करेंगे तो जन्म जन्मान्तर, युग युगान्तर आप कभी स्नान नहीं कर पाओगे। इसलिए समुद्र जैसा है आप वैसे ही कूदियेगा तो स्नान कर के निकलिएगा। अर्जुन ने अपने जीवन रथ की डोरी भगवान को सौंप दी है। जो बातें अर्जुन ने की हैं इस लाभ की प्राप्ति के लिये मेहरबानी कर के उन पर ध्यान दीजियेगा। एक तो उसने शिष्यत्व स्वीकार कर लिया है, मैं आपका शिष्य, आप मेरे गुरु महाराज। मात्र इतना ही नहीं कि मैं अपने आपको आपके श्री चरणों में (प्रपन्न) समर्पण करता हूँ, मेरे जीवन के रथ की बागडोर आप संभालिएगा, आप मेरे सारथी बनिएगा। और भगवान वो बने हैं भगवान ने नहीं सोचा कि मुझे इतना छोटा काम ये दे रहा है करने के लिए। कहाँ भगवान, कहाँ मैं और कहाँ एक रथ हाँकने वाला सारथी।

लेकिन चूँकि अर्जुन समर्पित हो चुका हुआ है और समर्पित के लिए हर कुछ करना मेरा व्रत है, मेरा प्रण है इसलिए अर्जुन मैं तेरे जीवन रथ की बागडोर सम्भालने के लिए तैयार हूँ। तीर चलेंगे मेरे से होते हुए तेरे पास जाएँगे मुझे पहले लगेंगे। मैं उनको रास्ता दूँगा तो तीर तुम्हें लगेगा, मैं रास्ता नहीं दूँगा तो तीर तेरे तक पहुँचेगा नहीं, ये गुरु की भूमिका है।

हम न जाने सुंदरकाण्ड के कितने पाठ कर चुके हैं लेकिन हमारा purpose अपने आप को बदलना नहीं है, न अमृतवाणी का पाठ कर के, न भक्ति प्रकाश का पाठ कर के, न रामायण जी का पाठ कर के और न ही गीता जी का पाठ कर के। हमारा purpose तो बहुत अलग हुआ करता है जिसका सभी को पता भी नहीं है। हमारा purpose है क्या, क्यों कर रहे हैं हम पाठ?

आगे बहुत कुछ होता है साधकजनो आप पढ़ेंगे अंत में क्या कहता है पार्थ। गीता पाठ से पहले वह क्या था? गीता श्रवण से पहले क्या था और सुनने के बाद क्या कहता है, ''हे अविनाशिन! तेरी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है।'' सिर्फ एक पाठ, हमने तो न जाने कितने पाठ किए हैं लेकिन मोह नित्य प्रति बढ़ता जा रहा है। क्यूँ माता, है न? ये मोह बढ़ता जा रहा है पुत्र के प्रति, पोत्रों के प्रति, पौत्रियों के प्रति, ये कहीं घटने का नाम ही नहीं ले रहा। अर्जुन हम सबके सामने, सारे संसार के सामने घोषणा करता है ये कोई छोटी बात नहीं है। संसार को काट मारिएगा, वह तो परमात्मा के सामने घोषणा करता है जिसके सामने कोई झूठ नहीं बोल सकता उसके सामने कहता है कि स्वामिन्! तेरी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया है मैं शोक ग्रस्त था, इस वक्त शोक रहित हो गया हूँ, मेरे संशय छिन्न–भिन्न हो गए हैं। मेरे मन में किसी प्रकार का संदेह नहीं है अब no doubts at all. मैं अक्षरशः तेरी आज्ञा का पालन करूँगा। मेरी बुद्धि ठीक हो गई है, मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है। अर्जुन ने अपना जीवन सफल कर लिया। अर्जुन जो सब कुछ छोड़ चुका हुआ था, उसने फिर धनुष बाण हाथ में ले लिया है और युद्ध करने के लिये तैयार खड़ा है। अर्जुन को युद्ध करने को तैयार खड़ा हुआ देख कर, संजय अपना मत प्रकट करता है। राजन! धृतराष्ट्र को संजय सारा हाल सुना रहा है। अंतिम श्लोक, ''हे राजन! जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण हैं और धनुर्धारी अर्जुन है, धनुर्हीन नहीं, धनुर्धारी अर्जुन मानो जहाँ परमेश्वर कृपा है, जहाँ शास्त्रानुसार चलने वाला पुरुषार्थी अर्जुन है वहीं श्री, वहीं विजय, वहीं समृद्धि, वहीं कीर्ति, वहीं सफलता, सब कुछ वहीं है, वहीं ऐश्वर्य, वहीं वैभव, वहीं विकास है। संजय अपना मत प्रकट करता है। हम सबको संदेश देता है कि जहाँ परमेश्वर की कृपा है, गीता का ज्ञान है, शास्त्र है और शास्त्र के अनुकूल चलने वाला अर्जुन है।

तीन बातें–अधिक न सही, इन तीन बातों को याद रखें, हम। जहाँ परमेश्वर की कृपा है, जहाँ शास्त्र है और शास्त्र अनुकूल चलने वाला पुरुषार्थी अर्जुन है, वहीं शान्ति है, वहीं परमानंद है, वहीं सफलता है, भौतिक भी एवं अलौकिक भी। मुक्ति की प्राप्ति उसे ही होगी। लौकिक लाभ उसे ही होंगे अन्यथा इसके

विपरीत जिंदगी भर टक्करें मारते रहिएगा, सफलता कहीं पास नहीं आएगी। भौतिक सफलता थोड़ी बहुत हो भी सकती है लेकिन अलौकिक सफलता से बिलकुल वंचित रह जाओगे। समय हो गया है आज यहीं समाप्त करने की इजाजत दीजियेगा धन्यवाद। परमात्मा कृपा कर। थोड़ा सुनें, थोड़ा पढ़ें, अधिक अपने जीवन में उतारें, इसी में कल्याण है। बेटा, थोड़ा पढ़ो, सुनो और उससे भी अधिक अपने जीवन में, अपने कर्मों में उतारो तो बादशाह बन जायोगे। इस लोक के भी बादशाह और उस लोक के भी बादशाह।

एक साधु – रामतीर्थ, सारे संसार के सामने, अमेरिका जैसे देश में जा कर घोषणा करता है कि एक बादशाह राम आया है। एक साधु, भीख माँगने वाला जिसके पास दो कपड़े नहीं पहनने को, वह अपने आपको बादशाह राम घोषित कर रहा है – किस बल पर?

धन्यवाद।

(पूजनीय श्री महाराज जी का प्रवचन, 17.07.2010) ■

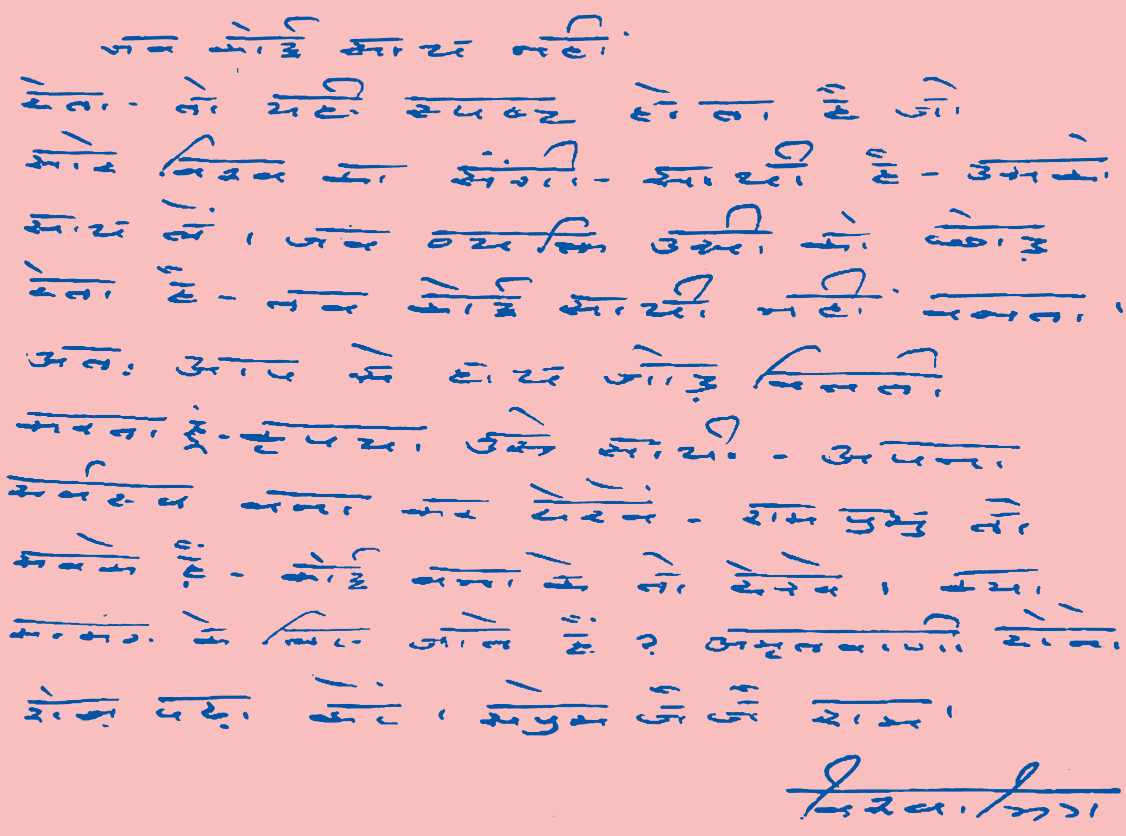

When no one stands by your side then it becomes clear that the one who is the companion and journeyman of the entire world must be taken alongside. When one leaves Him then no one walks alongside. Thus, with folded hands I request you, please make Him your companion, accept Him as your all in all. Prabhu Ram belongs to everyone, one should at least try to make Him one's own. Do you attend Satsang? Read Amritvani everyday. Loving Jai Jai Ram.

''तेरे बिना और नहीं जाना''

पूज्य महाराज श्री, 2004 में पंजाब में एक जगह पर श्रीरामशरणम के निर्माण के पश्चात पहली बार पधार रहे थे। मैं समय पर पहुँच गई हुई थी। द्वार बंद थे और मुझे द्वार के निकट ही स्थान मिल गया था। पर सैलाब उमड़ा हुआ था। जैसे ही द्वार खुले वह सैलाब भीतर सैलाब की तरह ही गया, एक एक करके नहीं। मैं तो चल ही नहीं पाई। केवल सैलाब के साथ अंदर प्रवेश कर सकी। मेरे मन में उस समय एक ही चीज आई कि हे प्रभु! महाराज कहीं यह सब देखकर disappoint न हो जाएँ। इसी सैलाब के साथ स्टेज के निकट ही स्थान मिला और वहीं बैठ गई। जगह बिल्कुल नहीं थी। टाँगें दोनों हाथों के मध्य दबोच कर बैठी थी। निरन्तर यही प्रार्थना चल रही थी कि पूज्य गुरूदेव आनन्दित रहें।

''तेरे बिना और नहीं जाना'' की धुन आरम्भ हुई पर सैलाब का शोर समाप्त नहीं हुआ। पूज्य महाराज पधारे। मेरी हृदय की धड़कन बहुत तेज थी और मैं आँखें मींचे हुई थी। तभी पूज्य महाराज ने धुन आरम्भ की। वे बैठे नहीं। स्टेज पर धुन गाते गए और मुस्कुरा कर स्टेज पर चलते रहे। सैलाब शान्त अपने आप हो गया। किसी को एक शब्द भी नहीं कहना पड़ा। लेकिन जगह नहीं थी कि चौंकडी भी मारी जा सके। मैं उसी तरह टांगों को आधा मोड कर बाजुओं में दबोच कर बैठी हुई थी। मेरी आँखों से अश्रुपात हो रहा था कि कैसे पूज्य महाराज ने सभी को शान्त कर दिया था और वे मुस्कुराते जा रहे थे।

मेरी आँखें बंद थीं और तभी पूज्य महाराज सहस्रभुजा माँ के रूप में रूपांतरित हो गए। और उन सहस्रभुजाओं में मैं जैसी बैठी थी वैसे ही मुझे ले लिया। मैं हिल नहीं सकती थी। उनकी देह का आकार बढा हुआ था किन्तु चेहरा अलौकिक हंसी के साथ खिल रहा था। बहुत कस कर सहस्त्र भुजाओं ने आलिंगन किया हुआ था। न जाने कितनी देर वह दिव्य आलिंगन रहा होगा। पर अविरल अश्रुधारा बहती जा रही थी।

श्री अमृतवाणी जी चल रही थी अब और थोड़ी जगह मिली कि टांगों की चौकड़ी मारी जा सके। पूज्य गुरूदेव ने प्रवचन में भी कुछ नहीं कहा।

मैंने ऐसा सद्गुरू पाया, मेरा रोम रोम हर्षाया। ■

Guru Jano ki Aseem Kripa

A devoted Sadhak's seventeen year old grand-daughter tried to commit suicide early this year by overdosing on some tablets. When the family discovered what the child had done, she was rushed to the hospital. She was critical and her liver functions were dangerously high.

Quite out of the blue, the Sadhak received a message from an unknown source. The message was: 'Your Gurjans have come to bless your family members with long life. Will you not thank your Gurus for this?'

To the sadhak it was obvious that the message had come from none else than our Gurujans. After a few days, the child's liver functions normalized and she was out of danger. As the doctor was discharging her, he remarked: 'It is a miracle that she is alive.'

The family was overwhelmed by the experience and the sadhak expressed her 'most humble gratitude' to our 'most merciful Gurudevs!' ■

श्रीरामशरणम् फाजलपुर (कपूरथला)-एक ऐतिहासिक विवरण

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

परम श्रद्धेय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने कपूरथला में 1936 में साधना सत्संग लगाया था (प्रवचन पीयूष पृष्ठ नं 383) और यहाँ पर श्री स्वामी जी महाराज की चरण धूलि है, उसी चरण धूलि का प्रताप है कि कपूरथला श्रीरामशरणम् का निर्माण हो गया।

कपूरथला के कुछ साधकों ने श्री प्रेम जी महाराज के जालन्धर पधारने पर उनसे नाम दीक्षा ग्रहण की थी। उसके पश्चात् दीक्षित साधक आपस में मिलकर कभी–कभी श्री अमृतवाणी का पाठ व भजन कीर्तन कर लिया करते थे। यह सब राम कृपा और गुरूजनों का पुण्य प्रताप है कि जो बीज श्री स्वामी जी ने 1936 में बोया था वह अंकुरित होना शुरू हो गया। जनवरी 1984 से यहाँ पर हर बुधवार को सायं श्री अमृतवाणी का पाठ और भजन कीर्तन नियमित रूप से शुरू हो गया। इसके अतिरिक्त प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को साधकों के घरों में जाप शुरू कर लेते और शाम को श्री अमृतवाणी पाठ और भजन कीर्तन कर लिया करते थे। नवम्बर 1991 में डा. विश्वामित्र जी महाराज इस जाप में सम्मिलित हुए थे और हमें जाप आरम्भ करना और जाप की पूर्ति की विधि बताई थी।

9 दिसम्बर 1993 को परम संत श्री विश्वामित्र जी महाराज उत्तराधिकारी बनने के बाद 16 मई 1994 को पहली बार कपूरथला पधारे और श्री सत्य नारायण मन्दिर में श्री अमृतवाणी पाठ और उनका प्रवचन हुआ। बहुत भारी संख्या में लोग इस सत्संग में उपस्थित हुए और 200 से ज्यादा लोगों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। 24 मार्च से 27 मार्च 1995 में सनातन धर्म सभा मन्दिर के प्रांगण में श्री महाराज जी ने तीन रात्रि का साधना सत्संग लगाया और इस साधना सत्संग के अनुशासन के बारे में कई स्थानों पर भूरी–भूरी प्रशंसा की।

15 मार्च, 1996 (श्री महाराज जी का जन्म दिवस) कपूरथला में श्री महाराज जी से श्री रामशरणम् के निर्माण के लिए प्रार्थना की। स्वर्गीय श्रीमति

उर्मिल सोंधी, पत्नी श्री रघुबीर राज सोंधी ने गाँव फाजलपुर में 2 एकड़ जमीन दान करने की बात श्री महाराज के सामने प्रस्तुत की और 22 जनवरी 1997 को श्री महाराज जी के कर कमलों द्वारा श्री रामशरणम् फाजलपुर, कपूरथला का शिलान्यास रखा गया। 16 मार्च से 29 मार्च 1998 में श्री महाराज जी ने फाजलपुर में 14 दिन तक निवास किया। उन दिनों में श्री राम शरणम् का निर्माण कार्य चल रहा था और फिर 27 अक्तूबर 1999 को 87 दिन के एकांतवास के पश्चात यहाँ फाजलपुर में आये थे। उस दिन करवाचौथ के दिन नाम दीक्षा भी दी थी।

27 फरवरी 2002 को फाज़लपुर, कपूरथला श्री रामशरणम् का उदघाटन मन्त्रोच्चारण के साथ परम पूज्य डा. विश्वामित्र महाराज जी के कर कमलों द्वारा किया गया। श्री राम शरणम् की भूमि बहुत ही उपजाऊ है। श्रीरामशरणम् फाज़लपुर के प्रांगण में चारों और फूल और फलों के वृक्ष लगाए गए जो अपनी विशेष आभा बिखेरते हैं। इस अद्‌भुत आध्यात्मिक वातावरण में साधक माला लेकर भ्रमण करते हुए आनंदित होते हैं। हमारे सभी साधकों का अनुभव है कि हमारे गुरुजन सूक्ष्म रुप में समय समय पर हमारा मार्गदर्शन करते हैं। यह उन्हीं का प्रताप है कि सभी कार्यक्रम सुचारु रुप से चल रहे हैं। तब से यहाँ पर नियमित रूप से प्रातः दैनिक सत्संग, सप्ताहिक सत्संग, मंगलवार का जाप सुचारू रूप से चल रहे हैं। परम श्रद्धेय श्री सत्यानन्द जी महाराज ने जो बीज 1936 में बोया था वह अब एक वृक्ष बनकर साधकों को फल प्रदान कर रहा है।

लीला है श्री राम की, सृष्टि के सब भाव।
अवलोकन कर प्रेम से, बढ़े चित्त में चाव।।

(भक्ति प्रकाश से)

दिसम्बर 2012 से यहाँ पर खुला सत्संग शुरू हो गया। वर्ष 2022 में 12 से 17 अप्रैल तक पाँच रात्रि का साधना सत्संग लगाया गया। मार्च के महीने में दो दिन का खुला सत्संग और नवम्बर के महीने में तीन रात्रि का साधना सत्संग शुरू हो गया है। साधक यहाँ आकर स्वच्छ एवं सुहावने वातावरण में, खुले प्रांगण में बैठ कर खूब जाप करते हैं। यहाँ के सत्संग हॉल में करीब दो हजार साधक बैठ सकते हैं। करीब 700 साधकों के ठहरने की व्यवस्था है। प्रभु राम कृपा से एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से साधकों की ऐसी भावना है –"हम हो गए मालो माल, राम तूने इतना दिया"। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
(मार्च से जून 2023)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **हीरानगर,** जम्मू व कश्मीर में 18 मार्च 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 178 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **पांवटा साहिब,** हिमाचल प्रदेश में 19 मार्च 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 50 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **झाबुआ,** मध्यप्रदेश में 21 से 30 मार्च 2023 तक चैत्र नवरात्रों में मौन साधना का आयोजन हुआ।
- **नरोट मेहरा,** पंजाब में 26 मार्च 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 70 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **देवगढ़ बारिया,** गुजरात में 2 अप्रैल 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 1418 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 2 से 7 अप्रैल 2023 तक परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग का आयोजन हुआ। 2 अप्रैल 2023 को 6 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **भरेड़ी,** हिमाचल प्रदेश में 8 अप्रैल 2023 को एक दिन के खुले सत्संग के बाद 83 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ज्वाली,** हिमाचल प्रदेश में 14 अप्रैल 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 605 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 15 से 18 अप्रेल और 20 से 23 अप्रेल 2023 तक झाबुआ के साधकों के लिए तीन रात्रि के दो विशेष साधना सत्संगों का आयोजन हुआ।
- **नागौद,** मध्य प्रदेश में 23 अप्रैल 2023 रविवार को अक्षय तृतीया के दिन नए श्रीरामशरणम् भवन के लिए भूमि पूजन एवं शिलान्यास हुआ। स्थानीय एवं अन्य स्थानों से भारी संख्या में साधक सम्मिलित हुए। इस अवसर पर 483 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **शुक्रताल,** उत्तर प्रदेश में 23 अप्रैल 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 151 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुना,** मध्य प्रदेश में 28 अप्रैल 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 291 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हिसार,** हरियाणा में 29 से 30 अप्रैल 2023 तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ। कुल 22 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मंडी,** हिमाचल प्रदेश में 7 मई 2023 को एक दिन के खुले सत्संग के बाद 35 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की ।
- **कंडाघाट,** हिमाचल प्रदेश में 14 मई 2023 को एक दिन के खुले सत्संग के बाद 25 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **आसनसोल,** पश्चिम बंगाल में 14 मई 2023

को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 121 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

- **होशियारपुर,** पंजाब में 21 मई 2023 को एक दिन के खुले सत्संग के बाद 36 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फरीदाबाद,** हरियाणा में 25 मई 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 59 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **चम्बी,** नागरी, हिमाचल प्रदेश में 3 जून 2023 को सायं भजन संध्या का आयोजन हुआ। 4 जून को प्रातः साप्ताहिक सत्संग में अमृतवाणी संकीर्तन एवं भजन कीर्तन हुआ, इसके पश्चात् दोपहर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का आयोजन हुआ जिसमें 43 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ,** जम्मू व कश्मीर में 11 जून 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद 140 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मनाली,** हिमाचल प्रदेश में 14 से 16 जून 2023 तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ, इस अवसर पर नाम दीक्षा का आयोजन भी हुआ, इसमें 38 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **किश्तवाड़,** जम्मू व कश्मीर में 24 जून 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा होगी।
- **भद्रवाह,** जम्मू व कश्मीर में 25 जून 2023 को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन के बाद नाम दीक्षा होगी।
- **हरिद्वार** में 28 जून से 3 जुलाई 2023 तक गुरु पूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) एवं परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में 5 रात्रि साधना सत्संग का आयोजन होगा।
- **श्रीरामशरणम् दिल्ली** में 2023 मार्च से मई तक 81 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की। ■

पत्रिका {गुना जिला
GUNA . DISTSRICT

'अपना कोई रिश्ता परमात्मा से बना लो फिर परमात्मा भी उसे स्वयं निभाता है'

गुना. रामशरणम परिवार ने श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर परिसर विवेक कॉलोनी में श्री अमृतवाणी सत्संग का विशेष आयोजन किया। इस आध्यात्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में साधक भाई-बहन शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने अमृतवाणी के पाठ, भजन कीर्तन और महाराज के प्रवचनों का लाभ लिया। कार्यक्रम के व्यवस्थापक अनिल तोमर, रेखा सूद, गुलशन डावर ने बताया कि स्वयं इंद्र देवता ने प्रसन्न होकर सत्संग के शुभारंभ के साथ ही वहां उपस्थित बड़ी संख्या में आए साधकों का जलाभिषेक कर स्वागत किया। सभी जन उसमें सहर्ष स्नान करते हुए दृढ़ता के साथ सत्संग का अमृत लाभ लेते रहे। विश्वामित्र महाराज ने प्रवचनों में सुंदर दृष्टांतों के माध्यम से साधकों से आग्रह किया कि अपना कोई रिश्ता परमात्मा से बना लो फिर परमात्मा भी उस रिश्ते को स्वयं निभाता है। सत्संग के पश्चात प्रथम बार जुड़े 291 साधकों ने महाराज से नाम दीक्षा ग्रहण करके स्वामी सत्यानन्द महाराज के महानतम कुल में सम्मिलित हुए।

Sadhna Satsang (July to December 2023)

Haridwar	28 June to 3rd July	Wednesday to Monday
Haridwar	30 September to 3rd October	Saturday to Tuesday
Haridwar (Ramayani)	15 to 24 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Saturday to Tuesday
Kapurthala	17 to 20 November	Friday to Monday

कृपया साधना सत्संग के लिए नाम 60 दिन पहले भेंजे।

Naam Deeksha In Shree Ram Sharnam Delhi

July	3	Monday 4.PM
July	26	Wednesday 4.PM
August	6	Sunday
September	10	Sunday
October	15	Sunday
November	26	Sunday
December	10	Sunday

Poornima (July to December 2023)

July	3rd	Monday
August	1st	Tuesday
August	31st	Thursday
September	29th	Friday
October	28th	Saturday
November	27th	Monday
December	26th	Tuesday

Open Satsang (July to December 2023)

Delhi	27 to 29 July	Thursday to Saturday
Rohtak	12 to 13 August	Saturday to Sunday
Alampur	3 September	Sunday
Rewari	16 to 17 September	Saturday to Sunday
Pathankot	23 to 24 September	Saturday to Sunday
Gurdaspur	6 to 8 October	Friday to Sunday
Sujanpur	27 to 29 October	Friday to Sunday
Jammu	3 to 5 November	Friday to Sunday
Kathua	25 November	Saturday
Melbourne (Australia)	1 to 3 December	Friday to Sunday
Amritsar	3 December	Sunday
Surat	16 to 17 December	Saturday to Sunday
Bhiwani	23 to 24 December	Saturday to Sunday

Naam Deeksha in Other Centers (July to December 2023)

Place	Date	Day
Alampur	3 September	Sunday
Pathankot	24 September	Sunday
Gurdaspur	8 October	Sunday
Sujanpur	29 October	Sunday
Jammu	5 November	Sunday
Kapurthala	19 November	Sunday
Kathua	25-Nov	Saturday
Melbourne (Australia)	3 December	Sunday
Amritsar	3 December	Sunday
Bhopal	10 December	Sunday
Surat	17 December	Sunday
Bhiwani	24 December	Sunday
Ujjain	25 December	Monday

Experiencing Bliss

Bliss in simple words means great joy or extreme happiness. Here is an easy way to experience bliss anytime during your day.

Sit comfortably cross legged on the floor in a space that is quiet and peaceful. Take a deep breath in and chant the word RAM slowly and melodiously as you breathe out for 7 counts. Do this with lots of love in your heart.

Then close your eyes and imagine a beautiful, powerful and glorious light shining on you- healing you, comforting you and empowering you. Sit in silence with love and gratitude in your heart holding on to this powerful image in your mind. Sit like this in silence for as many minutes as you can.

Once you are ready to open your eyes, chant the word RAM 7 times more, just as you did before.

Next, get your colour pencils out and draw the beautiful image of light that you saw in your mind in the box on the right. Take as long as you want to draw and colour it, and make it shine and glow.

Hold on to that feeling of love, peace and joy in your heart and enjoy colouring the powerful word RAM below. Keep repeating the word RAM in your mind or out loud as you colour. Feel the connection within you emerging and growing with the almighty RAM.

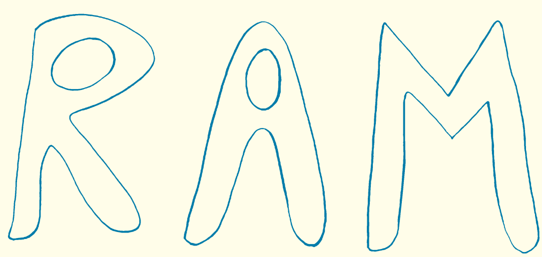

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर - 4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924